The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार

देशराज

असिस्टेंट प्रोफेसर, युवराजदत्त महाविद्यालय लखीमपुर खीरी

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648675

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

श्रीलाल शुक्ल, सामाजिक सरोकार, सामाजिक यथार्थ, जाति व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था

ABSTRACT

हिंदी उपन्यास परंपरा में सामाजिक यथार्थ और व्यंग्य को समान रूप से साधने वाले रचनाकारों में श्रीलाल शुक्ल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके उपन्यास स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की उन जटिलताओं और विडंबनाओं को सामने लाते हैं, जिनमें राजनीति, प्रशासन, ग्रामीण जीवन, जाति व्यवस्था, शिक्षा और नैतिक मूल्यों का पतन एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। श्रीलाल शुक्ल का साहित्य समाज की बाहरी संरचना तक सीमित न रहकर उसके भीतर सक्रिय शोषण-तंत्र, स्वार्थ और सत्ता-संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों—विशेषतः राग दरबारी, सीमाएँ टूटती हैं तथा सूनीघाटी का सूरज—के आधार पर सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि लेखक का सामाजिक सरोकार सुधारवादी उपदेश नहीं, बल्कि यथार्थ की तीखी, व्यंग्यात्मक और विश्लेषणात्मक प्रस्तुति है।

प्रस्तावना हिंदी उपन्यास परंपरा का विकास केवल साहित्यिक संरचना या कथाविन्यास तक- सीमित नहीं रहा है, बल्कि उसका गहरा संबंध समाज की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं और अंतर्विरोधों से रहा है। हिंदी उपन्यास आरंभ से ही सामाजिक यथार्थ का दर्पण रहा है, जिसने समयसमय पर -

बदलते सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश को रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में लोकतंत्र, समानता, सामाजिक न्याय और विकास जैसे आदर्शों की स्थापना की गई, किंतु व्यवहारिक धरातल पर ये आदर्श अनेक विसंगतियों और विरोधाभासों से घिर गए। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, प्रशासन, राजनीति और सामाजिक संस्थाएँ धीरेधीरे अपन-े मूल उद्देश्यों से भटकती चली गईं।

इसी ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि में श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास साहित्य विशेष महत्व रखता है। वे उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने स्वतंत्रताउत्तर भारतीय समाज की वास्तविकताओं को किसी - आदर्शवादी आवरण में नहीं, बल्कि तीखे व्यंग्य, यथार्थबोध और गहरी सामाजिक अंतर्दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया। उनका साहित्य सत्ता, राजनीति और समाज के गठजोड़ को उजागर करता है तथा यह दिखाता है कि किस प्रकार लोकतांत्रिक संस्थाएँ भीतर से खोखली होती चली गईं।

श्रीलाल शुक्ल का सामाजिक सरोकार सुधारवादी उपदेशों या नैतिक आदर्शों की स्थापना तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक समस्याओं को व्यक्तिगत चारित्रिक दोषों के रूप में नहीं, बल्कि एक विकृत और अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की देन के रूप में देखते हैं। उनके उपन्यास यह स्पष्ट करते हैं कि जाति व्यवस्था, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, शिक्षा का पतन और नैतिक मूल्यों का ह्रास स्वतंत्रता के बाद भी किस प्रकार गहराता गया।

ग्रामीण समाज, जिसे प्रायः हिंदी साहित्य में सरल, निष्कलुष और नैतिक रूप में प्रस्तुत किया गया है, श्रीलाल शुक्ल के यहाँ सत्तासंघर्ष-, शोषण और अवसरवाद का केंद्र बन जाता है। पंचायतें, विद्यालय, सहकारी संस्थाएँ और विकास योजनाएँ सामाजिक कल्याण के बजाय निजी स्वार्थों की पूर्ति का साधन बन जाती हैं। इस प्रकार श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास साहित्य स्वतंत्रताउत्तर भारतीय समाज की - वास्तविक स्थिति, उसकी विडंबनाओं और अंतर्विरोधों को बिना किसी आवरण के प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण - करते हुए यह स्थापित करना है कि उनका साहित्य न केवल अपने समय का प्रामाणिक दस्तावेज़ है, बल्कि समकालीन भारतीय समाज को समझने की एक सशक्त आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रदान करता है।

राजनीति का अपराधीकरण और ग्रामीण सत्ता-संघर्ष

श्रीलाल शुक्ल यह स्पष्ट करते हैं कि स्वतंत्रता के बाद गाँवों तक पहुँचा लोकतंत्र विकास और जनकल्याण का माध्यम बनने के बजाय बाहुबल, गुंडागर्दी और सत्ता-संघर्ष में बदल गया। राग दरबारी में राजनीति जनसेवा नहीं, बल्कि वर्चस्व स्थापित करने का औज़ार बन जाती है।

वैद्यजी जैसा पात्र यह दर्शाता है कि किस प्रकार एक व्यक्ति धर्म, राजनीति, शिक्षा और प्रशासन—सभी संस्थाओं को अपने प्रभाव में लेकर पूरे सामाजिक ढाँचे को नियंत्रित करता है। राग दरबारी उपन्यास के रुप्पन बाबू जो स्वयं एक विद्यार्थी नेता हैं का कथन उल्लेखनीय है वे कहते हैं, ''देखो दादा यह तो पॉलिटिक्स है, इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है| दुश्मन को जैसे भी हो चित्त करना चाहिए|''1

उपन्यास में चुनाव प्रक्रिया लोकतांत्रिक चेतना की नहीं, बल्कि उसकी विफलता की प्रतीक बन जाती है। साम-दाम-दंड-भेद के खुले प्रयोग और आम जनता की मूक स्वीकृति एक गंभीर सामाजिक चिंता के रूप में उभरती है। आदमी का जहर उपन्यास में जसवंत नामक पात्र के माध्यम से राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाला गया है "यह सभी जानते थे कि जसवंत अपने मुहल्ले का बदनाम आदमी है, वह कई बार कारपोरेशन का चुनाव लड़ चुका था और अपनी जनप्रियता के कारण नहीं, बल्कि डराने–धमकाने की शक्ति और अंधाधुंध रुपए के ज़ोर से उसकी जीत होती थी|"

जर्जर शिक्षा व्यवस्था

श्रीलाल शुक्ल ने शिक्षा के बाजारीकरण और शिक्षण संस्थानों में व्याप्त राजनीति पर गहरा प्रहार किया है। राग दरबारी का छंगामल इंटर कॉलेज केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, बल्कि उस भ्रष्ट तंत्र का प्रतीक है जहाँ शिक्षकों की नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि जाति, सिफारिश और व्यक्तिगत निष्ठा के आधार पर होती है। ऐसे विद्यालयों के बनने के पीछे के मकसद के संबंध में लेखक का कहना है –"किसी स्थानीय जननायक की प्रेरणा से शिक्षा प्रचार के लिए और वास्तव में उसके लिए विधान सभा या लोक

सभा के चुनावों की जमीन तैयार करने के उद्देश्य से खोले जाते थे और उनका मुख्य कार्य मास्टरों और सरकारी अनुदानों का शोषण करना था...|3

लेखक यह दिखाते हैं कि शिक्षण संस्थान डिग्री बाँटने वाली मशीनों में बदल चुके हैं, जो ऐसे युवकों को जन्म दे रहे हैं जिनके पास न कौशल है और न ही नैतिक प्रतिबद्धता। सूनीघाटी का सूरज में उच्च शिक्षित युवक की असुरक्षा इसी सामाजिक विडंबना को उजागर करती है। सूनी घाटी का सूरज में भी ऐसा ही एक संदर्भ आया है जहां रामदास अपने सहपाठियों के संबंध में कहता है –"मेरे उन साथियों में कोई दस तक पहाड़ा पढ़ता हुआ हल जोत रहा है|कोई सौ तक गिनती गिनता हुआ भाड़ झोंक रहा है| कोई रामायण की चौपाइयां कहता हुआ बैलगाड़ी चला रहा है ढेकुली खींच रहा है|"4

प्रशासनिक और न्यायिक भ्रष्टाचार

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में प्रशासन आम आदमी की सहायता के लिए नहीं, बल्कि उसे उलझाने और भयभीत करने के लिए बना हुआ तंत्र प्रतीत होता है। थानों और कचहरियों में न्याय रसूखदारों का पक्ष लेता है, जबकि गरीब और कमजोर व्यक्ति को दर-दर भटकना पड़ता है।

पहला पड़ाव उपन्यास के वकील परमात्म जी के माध्यम से लेखक अपना आक्रोश व्यक्त करता है –"अब सरकार नाम की कोई चीज नहीं रही अंग्रेज एक कूड़े का ढेर छोड़ गए थे 'नौकरशाही' उसी की सड़ांध में हम लोग सांस ले रहे हैं|हालत बड़ी खराब है|"5

सरकारी योजनाओं का कागज़ी विकास लेखक के व्यंग्य का प्रमुख लक्ष्य है। योजनाएँ फाइलों में पूरी हो जाती हैं, लेकिन धरातल पर सड़कें, कुएँ और सुविधाएँ कभी अस्तित्व में नहीं आतीं। यह 'फाइल संस्कृति' पर उनका सबसे तीखा प्रहार है। मकान उपन्यास में ऐसी ही स्थिति का चित्रण करते हुए आवासीय विभाग की एक अधिकारी के भ्रष्टाचार का चित्रण किया गया है यूनियन नेता बारीन दा नारायण से कहते हैं –"तुम रोज निवेदन करते रहोगे ये तुमको रोज टालू मिक्सचर पिलाते रहेंगे| कोई ऊंची शिफारिश हो तो एक दिन में तुमको मकान दे देंगे|"6

नैतिक मूल्यों का पतन और अवसरवाद

श्रीलाल शुक्ल के पात्र दोहरे मापदंडों के साथ जीते हुए दिखाई देते हैं। आदर्शवाद केवल भाषणों तक सीमित रह जाता है, जबकि व्यवहारिक जीवन स्वार्थ और छलावे से संचालित होता है।

विश्रामपुर का संत में राजनीतिक लाभ के लिए 'संत' बनने का ढोंग नैतिक पतन की चरम स्थिति को दर्शाता है।

राग दरबारी का रंगनाथ जैसे शिक्षित युवक का व्यवस्था के सामने हार मान लेना यह स्पष्ट करता है कि केवल किताबी ज्ञान सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। रंगनाथ का कथन है – "तुम मझोली हैसियत के मनुष्य हो और मनुष्यता के कीचड़ में फंस गए हो| तुम्हारे चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ है.... कीचड़ से बचो| यह जगह छोड़ो|यहां से पलायन करो|7

जातिवाद

राग विराग उपन्यास में श्री लाल शुक्ल जी ने देश में बढ़ रही असमानता का चित्रण किया है स्वातंत्र्योत्तर राजनीति से यह आशा थी कि वह जाति भेद की दीवार को तोड़ देगी लेकिन परिणाम बिल्कुल उलट हुआ राजनीति ने जाति भेद को और मजबूत करके जातिवाद को हर स्तर पर और बढ़ावा दिया, उपन्यास की नायिका सुकन्या की मौसी उससे कहती है कि –"देख नहीं रही हो, राजनीति ने किस तरह मेहनत और मरम्मत करके आज जाति भेद के किले को कितना मजबूत बना दिया है|"8

निम्न और मध्यम वर्ग का संघर्ष तथा सामाजिक संवेदनहीनता

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में निम्न और मध्यम वर्ग की आर्थिक विवशताओं को संवेदनशीलता के साथ उकेरा गया है। पहला पड़ाव में मज़दूर वर्ग का संघर्ष व्यवस्था के शोषण-चक्र को उजागर करता है।

राग दरबारी का वह प्रसिद्ध प्रसंग, जहाँ सड़क पर गिरे व्यक्ति की सहायता करने के बजाय लोग पुलिसिया झंझट के डर से भाग जाते हैं, समाज की सामूहिक संवेदनहीनता का अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास सामाजिक सरोकारों का सशक्त और प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं। राजनीति, शिक्षा, प्रशासन, नैतिकता और वर्ग-संघर्ष—ये सभी तत्व उनके साहित्य में परस्पर गहराई से जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

राग दरबारी, सीमाएँ टूटती हैं और सूनीघाटी का सूरज यह स्पष्ट करते हैं कि स्वतंत्रता के बाद जिन लोकतांत्रिक और नैतिक आदर्शों की कल्पना की गई थी, वे व्यवहारिक स्तर पर किस प्रकार विफल हो गए।

इस दृष्टि से श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास साहित्य न केवल अपने समय का यथार्थ प्रस्तुत करता है, बल्कि समकालीन भारतीय समाज को समझने के लिए एक गहरी, आलोचनात्मक और विवेकपूर्ण दृष्टि भी प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

- राग दरबारी, पृष्ठ.145
- आदमी का जहर, पृष्ठ.95
- रागदरबारी, पृष्ठ.232
- सूनी घाटी का सूरज, पृष्ठ.23
- पहला पड़ाव, पृष्ठ.69
- मकान, पृष्ठ 92
- रागदरबारी, पृष्ठ 327
- राग -विराग, पृष्ठ 107